Post Graduate Programme

M.A (Maithili)

Semester - II

Paper: CC-7 Paper Code: MTL 523 Topic: अलंकार (Unit-IV)

'सन्देह' अलंकारक सोदाहरण परिभाषा

परिभाषा - "ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।"[1]

कोनो वस्तुक विषयमे सादृश्यमूलक संशय होएबापर सन्देह अलंकार होइछ, यथा-

" सुरपति- धनु कि शिखंडक चूड़ ।
मालति माल कि बलाकिनि ऊड़ ॥
भाल कि चाँपल विधु अधखंड ।
करिवर- कर किअ ओ भुजदंड ॥"[2]

एतए महाकवि गोविन्ददास सन्देह कए रहल छथि जे मयूरक- पिच्छ थिक की इन्द्रधनुष? मालती फूलक माला थिक की बक - पंक्ति? ललाट थिक की मेघसँ आच्छा झापल चन्द्रमा? कृष्णक भुजदंड थिक की हाथीक सूढ़? सन्देह उत्पन्न होएबाक कारणें एतए 'सन्देह' अलंकार भेल।

सन्देह अलंकार तीन प्रकारक होइछ-

(क) शुद्ध- जतए अन्त धरि सन्देह बनल रहए।

(ख) निश्चयमध्य- जतए आदि ओ अन्तमे तँ सन्देह होअए, मुदा मध्यमे निश्चय

भए जाए। निश्चयमध्यकें 'निश्चयगर्भ' सेहो कहल जाइत अछि।

(ग) निश्चयान्त - जतए आरम्भमे सन्देह होअए मुदा अन्तमे निश्चय भए जाए।

1. सू. सं. - 92, दशमोल्लास, 'काव्यप्रकाश' : मम्मट।
2. पृ. - 116, 'गोविन्ददास भजनावली', सं. - पं. गोविन्द झा।

- प्रोफेसर (डॉ.) वीरेन्द्र झा
मैथिली विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना-5